The BIG BRAG

तीन तीसमारखाँ

डॉ. जॉयस

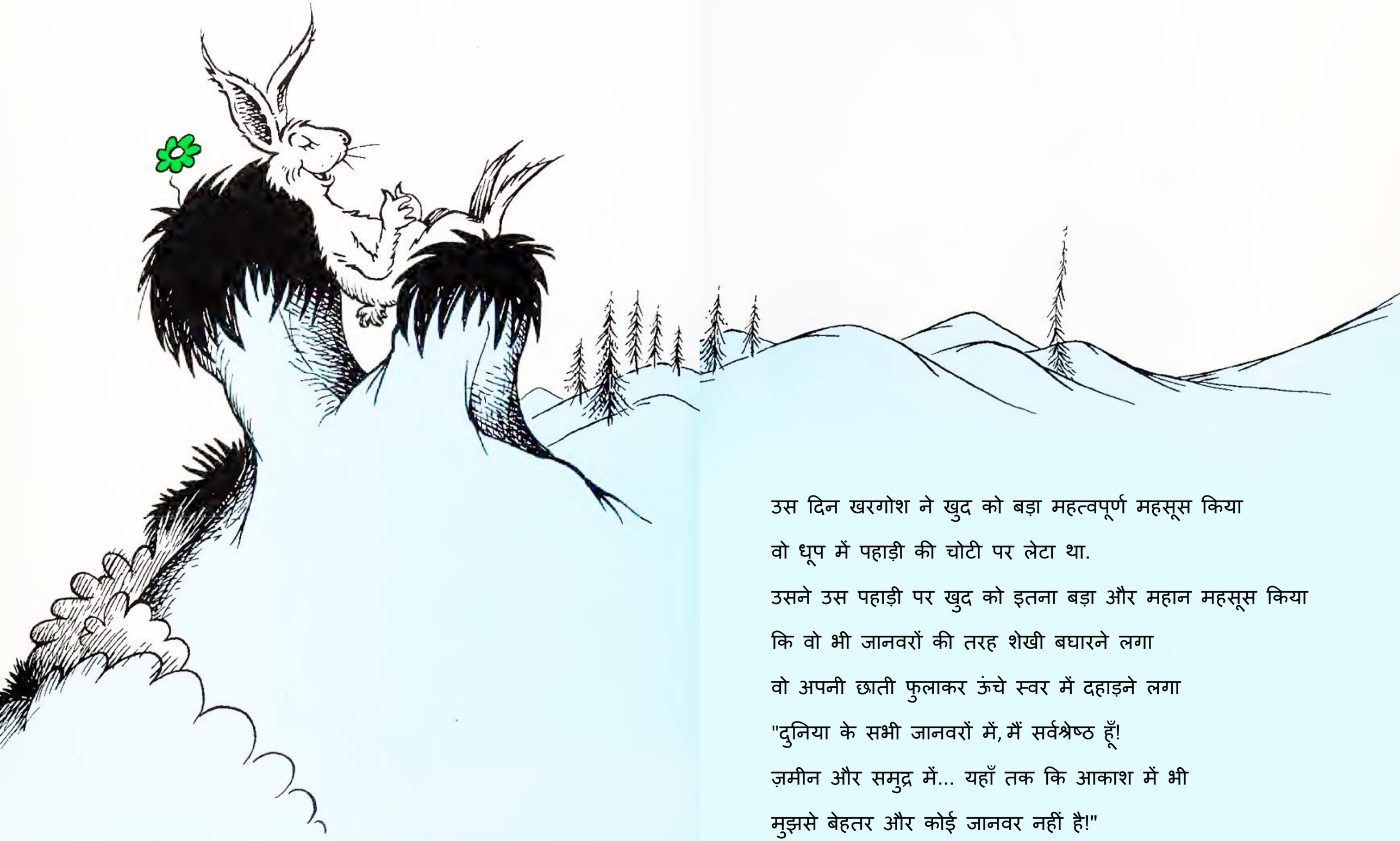

उस दिन खरगोश ने खुद को बड़ा महत्वपूर्ण महसूस किया

वो धूप में पहाड़ी की चोटी पर लेटा था.

उसने उस पहाड़ी पर खुद को इतना बड़ा और महान महसूस किया

कि वो भी जानवरों की तरह शेखी बघारने लगा

वो अपनी छाती फुलाकर ऊंचे स्वर में दहाड़ने लगा

"दुनिया के सभी जानवरों में, मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ!

ज़मीन और समुद्र में... यहाँ तक कि आकाश में भी

मुझसे बेहतर और कोई जानवर नहीं है!"

"क्या बकवास है?" एक ऐसी आवाज गुर्राई जो बहुत कर्कश थी.

“तुम इतनी बेतुकी बातें क्यों कर रहे हो?”

खरगोश ने नीचे देखा और उसे एक बड़ा भालू दिखाई दिया.

''देखो, मैं जानवरों में सर्वश्रेष्ठ हूं!'' भालू ने कहा, “और इसीलिए मैं यहाँ हूँ!''

"तुम नहीं हो!" खरगोश ने उसको बीच में रोका. "देखो, मैं तुमसे बेहतर हूँ!"

"उह!" भालू ने एक खर्राटा लिया. "फिर से मैं कहता हूं, नहीं!

तुम बहुत बड़ी- बड़ी बातें करते हो, मिस्टर खरगोश. यह सच है.

लेकिन तुम अपनी डींग कैसे साबित कर सकते हो? बताओ कैसे?“

"हम्म्म्म..." खरगोश ने सोचा,

"अब मैं क्या कर सकता हूँ...?"

उसने सोचा और उसने सोचा. फिर आख़िर उसने कहा,

"मिस्टर भालू, क्या तुम मेरे सिर पर ये दो कान देख रहे हो?

मेरे कान बहुत तेज़, बहुत बड़े और बहुत अच्छे हैं

दुनिया में कोई कान, मेरे कानों से ज़्यादा दूर तक नहीं सुन सकते हैं!"

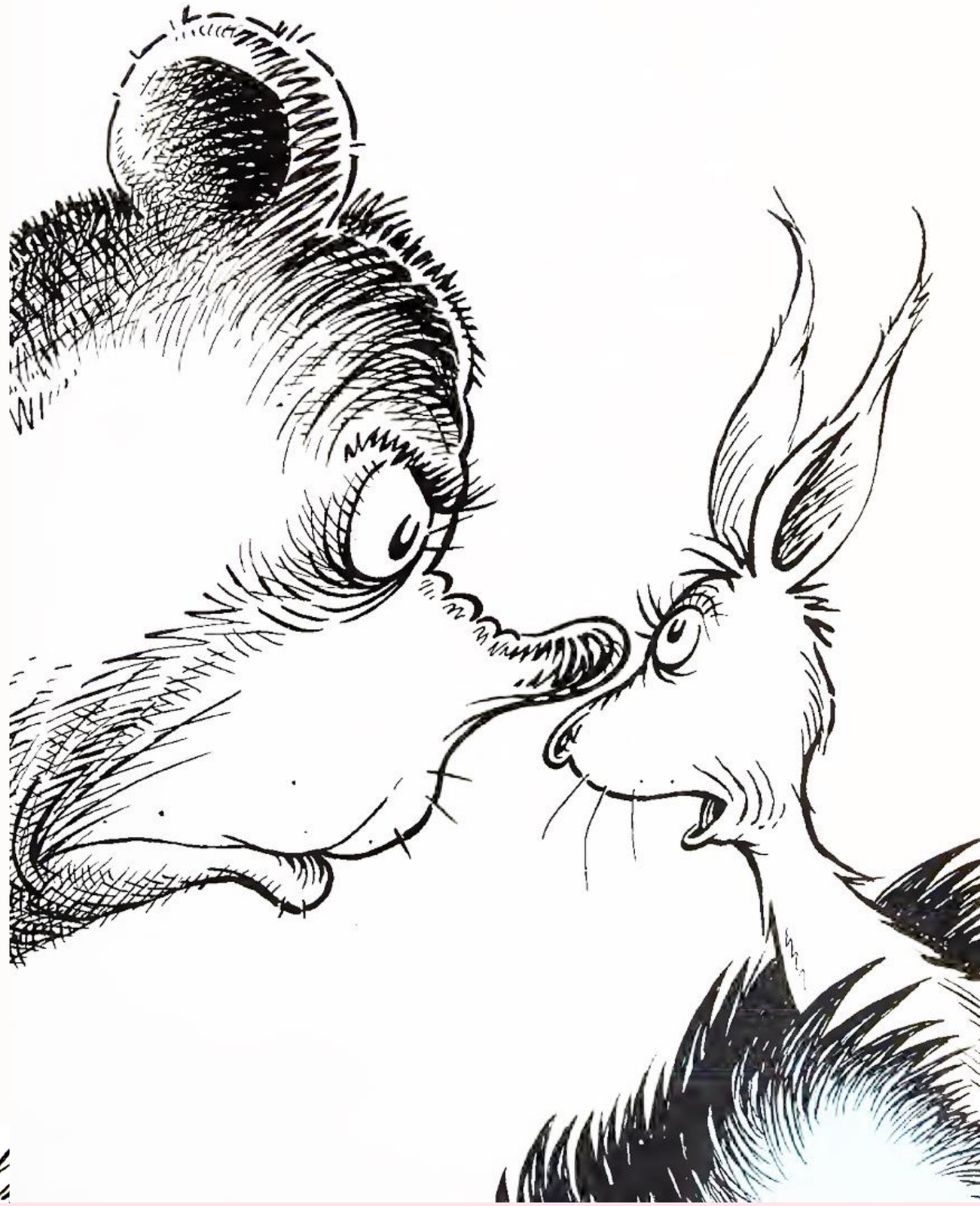

"हम्प्फ़!" भालू गुर्राया. उसने प्रत्येक कान को घूरा.

"तुम कहते हो कि वे अच्छे हैं," भालू ने व्यंग्यपूर्वक कहा,

"लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि वे कितनी दूर तक सुन सकते हैं?"

"मैं साबित करूंगा," खरगोश ने कहा, "कि मेरे कान सबसे अच्छे हैं.

तुम वहाँ बैठो और मुझको देखो. मैं वो परीक्षण द्वारा सिद्ध करूंगा."

फिर उसने अपने कान कड़े किए, फिर दोनों कान ऊंचे खड़े किए

उसके कानों ने सीधे नीले आकाश की ओर इशारा किया.

फिर उसने अपने कान यथा संभव फैलाए.

“११श! मैं सुन रहा हूँ!" उसने खड़े होते हुए कहा.

उसने इतने ध्यान से सुना कि उसे पसीना आने लगा

और उसके कान और माथा बिल्कुल गीला हो गया.

सात मिनट तक वह खड़ा रहा. फिर वो कुछ हिला डुला

और उस ने भालू से कहा, क्या तुम जानते हो कि मैंने क्या सुना?

क्या तुम्हें वह दूर का पहाड़ दिख रहा है? . . ? वह नब्बे मील दूर है.

उस पहाड़ पर एक मक्खी है. मैंने उसे अभी-अभी खांसते हुए सुना है!

अब मक्खी की खांसी सुनना बहुत मुश्किल है दोस्त,

अगर वो नब्बे मील दूर हो. लेकिन मैंने उसे बिल्कुल स्पष्ट सुना है.

"अब तुम देखो," खरगोश ने डींग हांकी, "यह बिल्कुल सच है

कि मेरे कान सबसे अच्छे हैं, इसलिए मैं तुमसे बेहतर हूँ!"

भालू एक पल के लिए उदास हो गया

उसे पता था कि उसके कान ऐसी आवाज़ नहीं सुन सकते थे.

"इस खरगोश ने," उसने सोचा, "मुझे मूर्ख बनाया है.

अब मुझे यह साबित करना होगा कि मैं उससे बेहतर हूं."

फिर उसने खरगोश से कहा, "तुम बहुत अच्छा सुनते हो.

तुम नब्बे मील दूर की बातें सुन सकते हो.

लेकिन बताओ, तुम कितनी दूर तक सूंघ सकते हो?

मैं सूँघने वालों में सबसे महान हूँ," भालू ने डींग हांकी.

"ज़रा मेरी नाक देखो?

मेरे चेहरे की यह नाक दुनिया में है सबसे नायाब.

मेरी नाक दूर और पास दोनों की कोई भी चीज़ सूँघ सकती है.

तुम जितनी दूर की सुनते हो, मेरी नाक उससे दोगुनी दूरी सूंघ सकती है!"

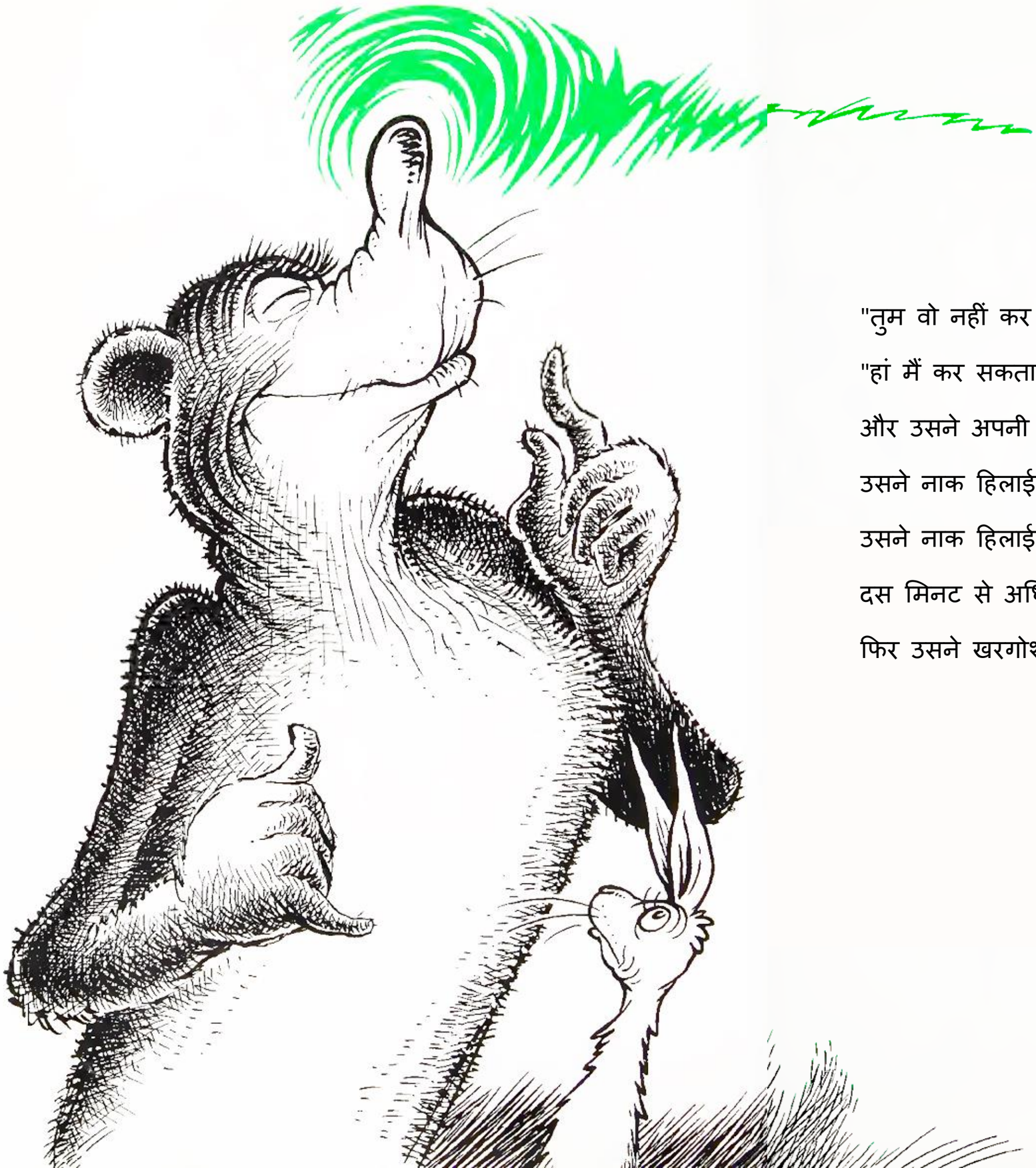

"तुम वो नहीं कर सकते हो!" खरगोश ने उसे टोकते हुए कहा.

"हां मैं कर सकता हूँ!" भालू गुर्राया

और उसने अपनी बड़ी नाक को हवा में बहुत ऊपर तक उठाया.

उसने नाक हिलाई और सूँघा और सूँघा.

उसने नाक हिलाई और फिर वो फुसफुसाया.

दस मिनट से अधिक समय तक वह सूंघता रहा और सूंघता रहा.

फिर उसने खरगोश से कहा, "मैं काफी दूर तक सूंघ चुका हूं."

"ठीक है," खरगोश ने कहा. “चलो अब बताओ

तुम जो गंध सूंघ रहे थे वह वास्तव में कितनी दूर है?"

"ओह, मुझे बहुत दूर से गंध आ रही है," भालू ने कहा.

"वहां उस पहाड़ पर उड़ने वाली मक्खी से भी दूर से.

मैं कई ऊंचे पर्वतों के पार की सुगंध सूंघ पा रहा हूं

तालाब के किनारे, छह सौ मील दूर की खुशबू सूंघ पा रहा हूँ."

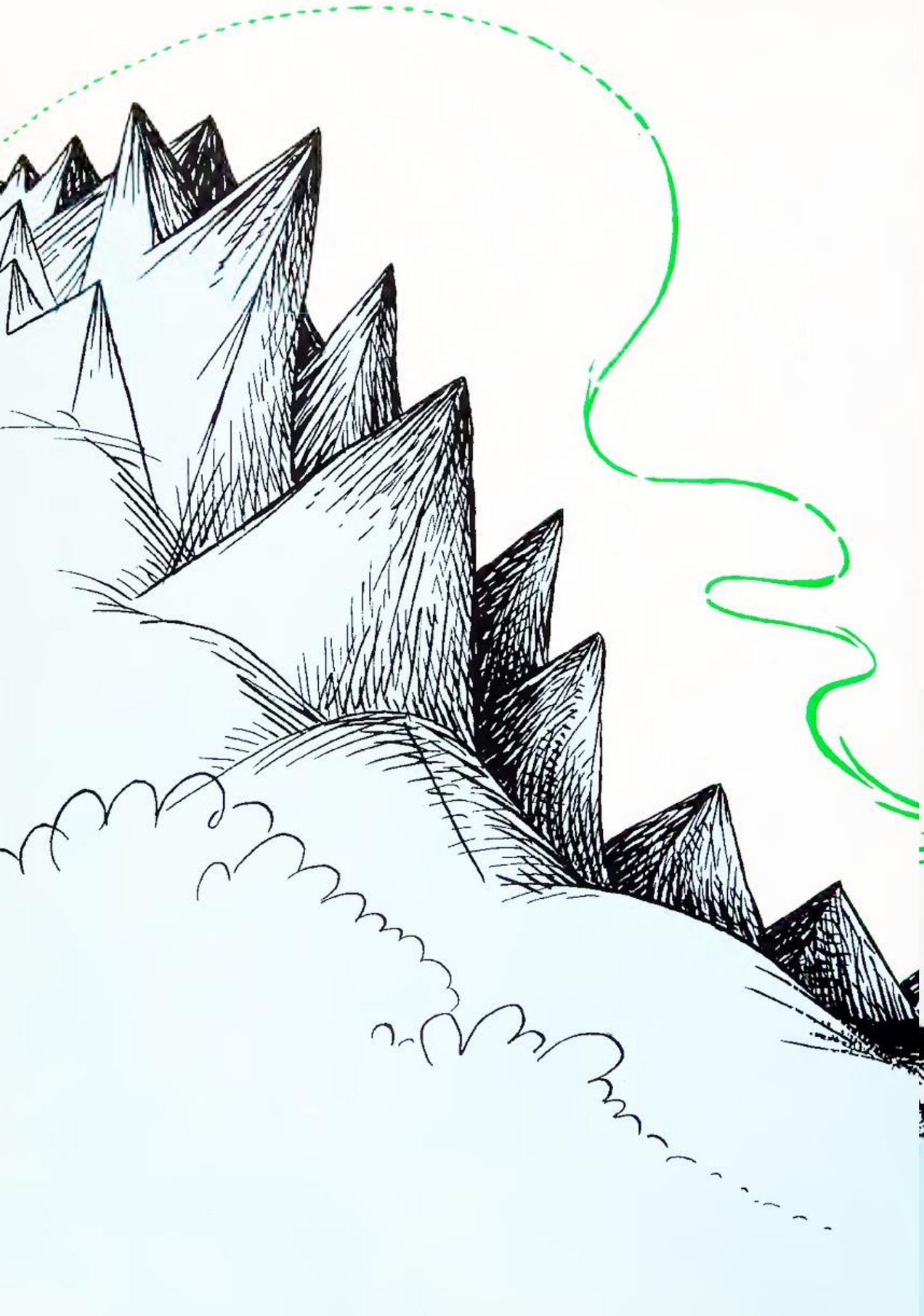

"और वहां बहुत दूर तालाब के पास जहां तुम नहीं देख सकते हो
एक बहुत छोटा सा खेत. खेत पर एक पेड़ है.
पेड़ पर एक शाखा है. शाखा पर एक घोंसला है,
घोंसला बहुत छोटा सा है, जहां दो छोटे अंडे रखे हैं.
वे दोनों चिड़िया के अंडे हैं! जो केवल आधा इंच लम्बे हैं!
लेकिन मेरी नाक, " भालू ने कहा, "बहुत आश्चर्यजनक रूप से तेज़ है,
मेरी नाक इतनी अच्छी है कि मैं बिना किसी मुश्किल के सूँघ सकता हूँ
कि बायीं ओर वाला अंडा थोड़ा बासी है!
और वो एक ऐसी चीज़ है जो कोई खरगोश नहीं कर सकता है.
अब तुम देखो," भालू ने शेखी बघारी, "मैं तुमसे बेहतर हूँ!
मेरी गंध सूंघने की क्षमता इतनी तेज़ है कि उसे कोई हरा नहीं सकता है."

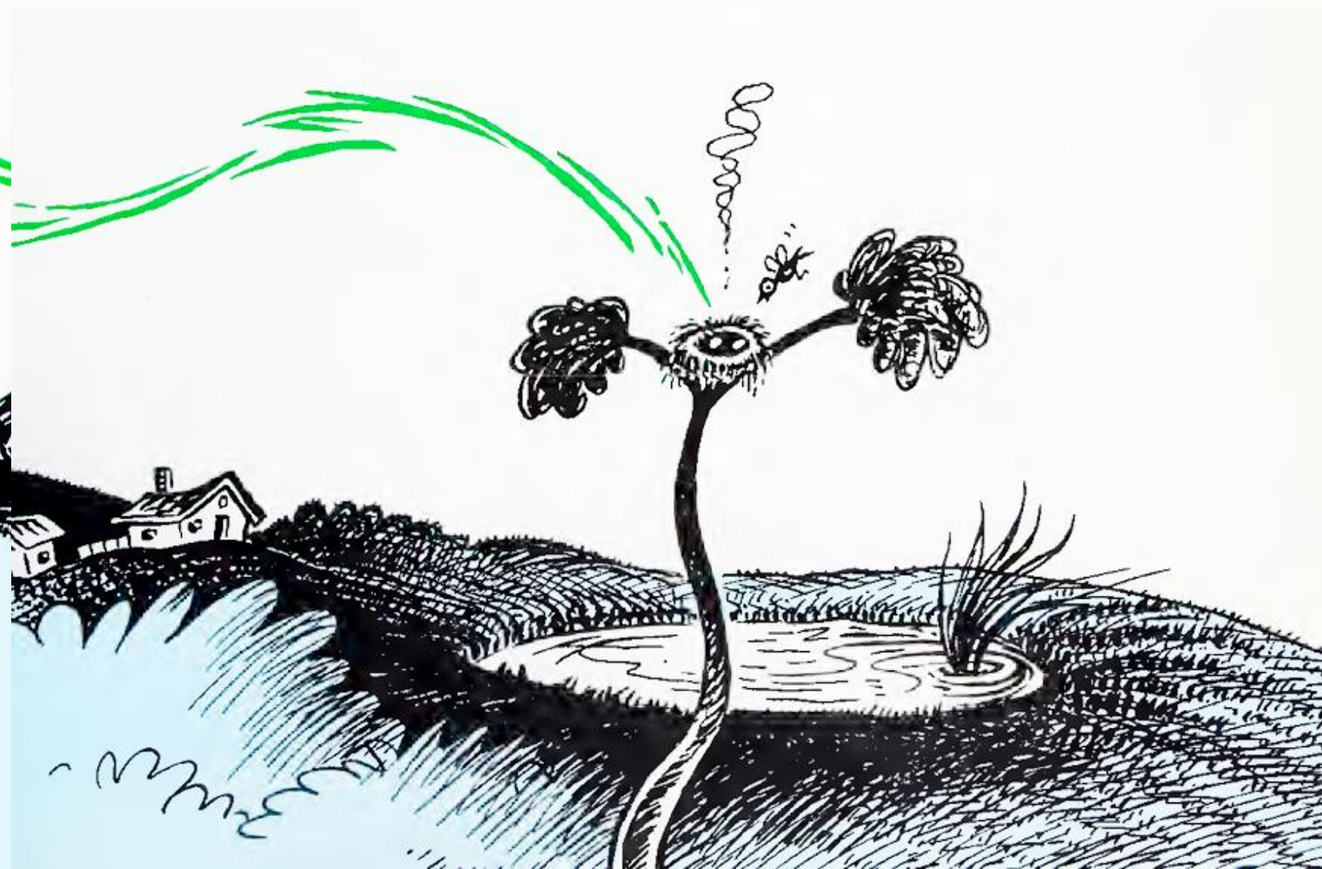

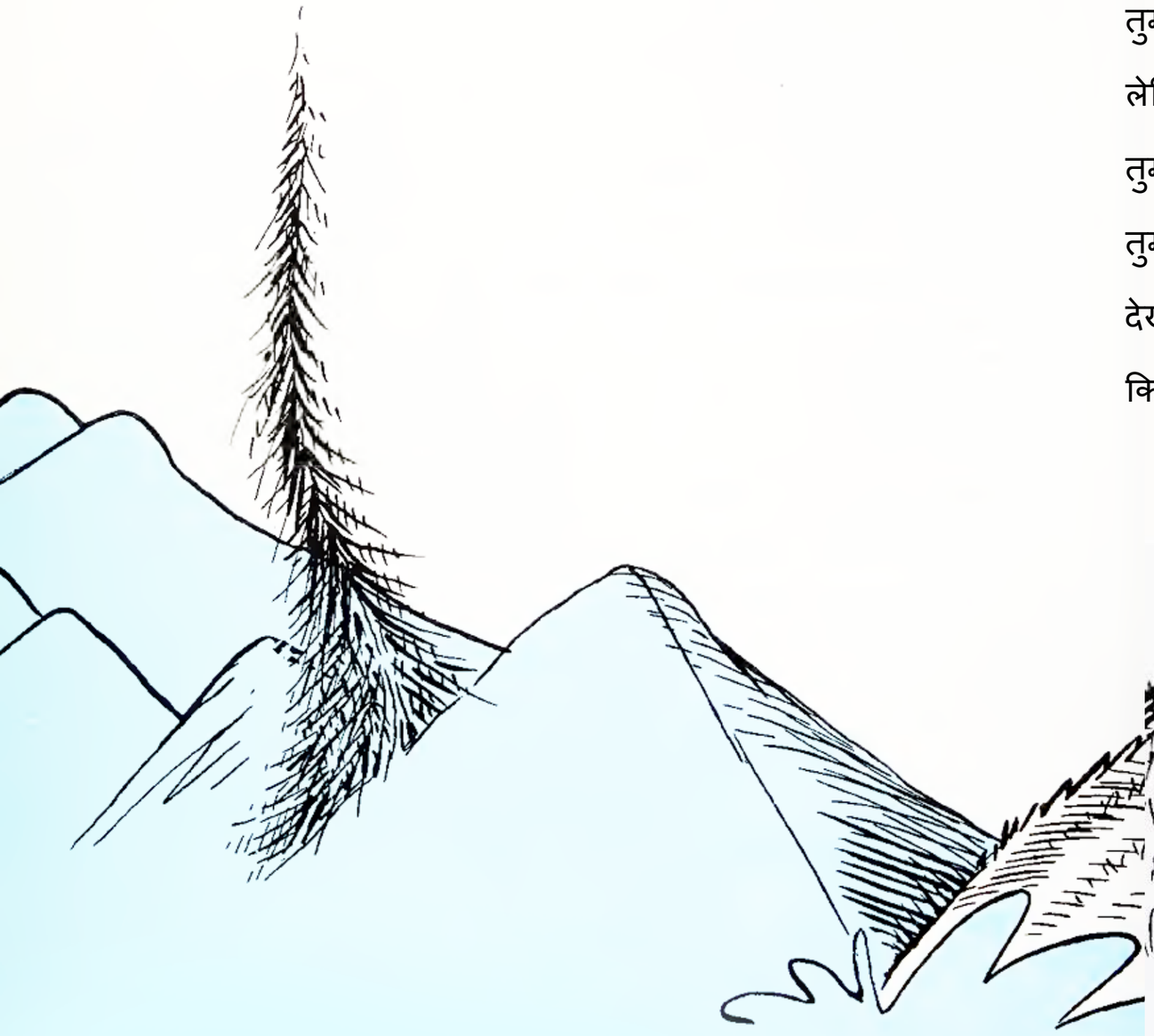

"यह सब क्या चल रहा है?" तभी उनके पैरों के नीचे से एक आवाज़ आई.

भालू और खरगोश ने आवाज सुनकर नीचे देखा,

उन्होंने ज़मीन पर एक बूढ़ा कीड़ा रेंगते हुए देखा.

"अब, लड़कों," कीड़े ने कहा, "तुम बहुत डींगें मार रहे हो.

तुम दोनों सोचते हो कि तुम महान हो.

लेकिन मुझे नहीं लगता है तुम महान हो.

तुम मेरे जैसे जीव से आधे भी अच्छे नहीं हो.

तुममें से एक सुनता है दूसरा सूंघता है. लेकिन तुम कितनी दूर देख सकते हो?

देखो मैं तुम जैसे बड़ी शेखी बघारने वालों के सामने यह साबित करने को आया हूं

कि तुम्हारे नाक-कान मेरी आँखों जितने अच्छे नहीं हैं!"

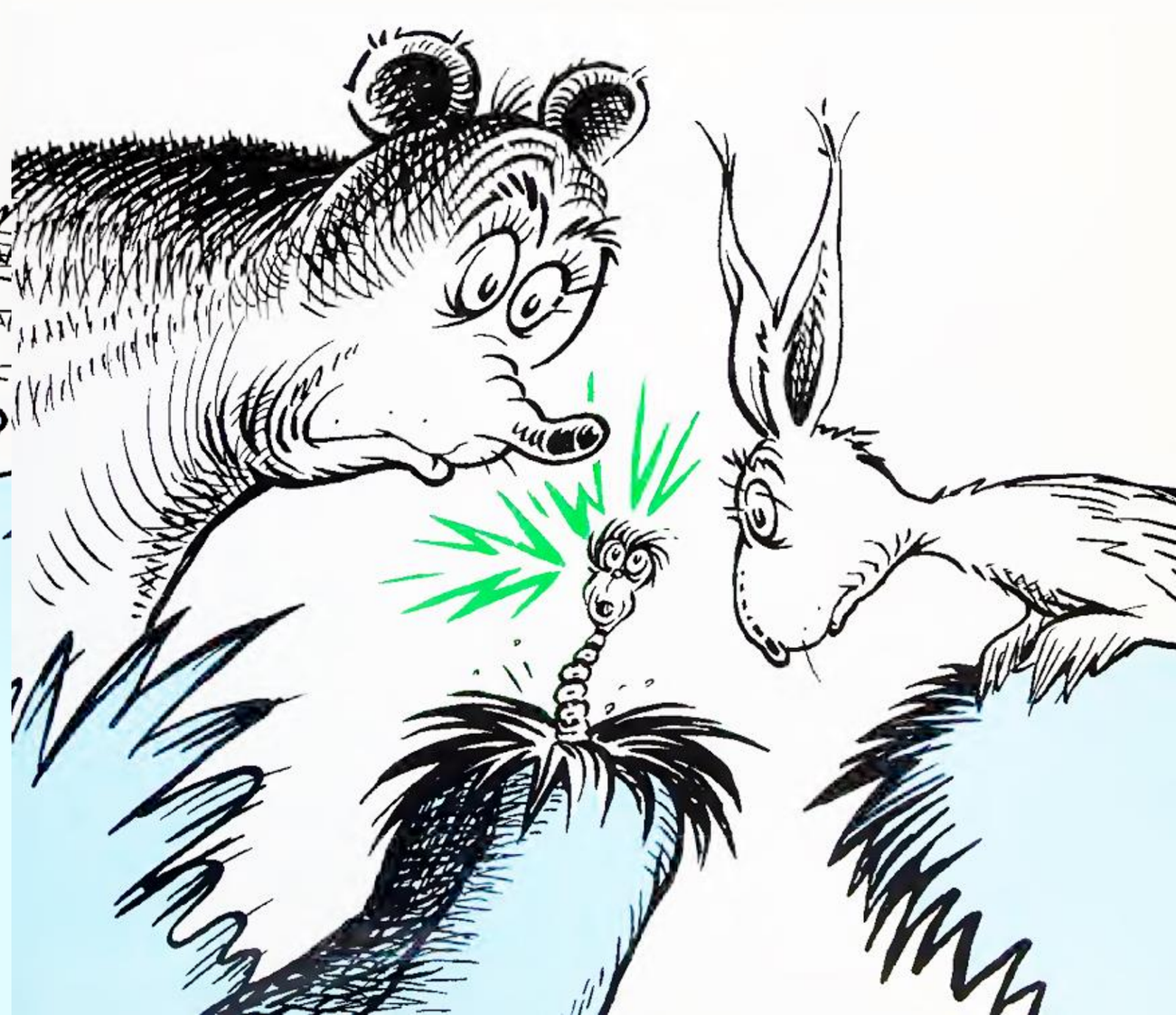

और फिर छोटे बूढ़े कीड़े ने अपना सिर एक तरफ झुकाया

उसने अपनी आँखें खोलीं और उसने उन्हें पूरी तरह खोला.

फिर वे आंखें एक अजीब तरह की घूरकर दूर तक देखने लगीं.

मानो वे हवा में दो छेद बना रही हों.

कीड़े की आँखें लगभग उसके सिर से बाहर आ गईं.

वो आधे घंटे तक घूरता रहा जब तक कि उसकी आंखें लाल नहीं हो गईं.

"बस बहुत हो गया!" भालू गुर्राया.

"खरगोश और मुझे यह बताओ

कि तुमने कितनी दूर तक देखा और क्या-क्या देखा?"

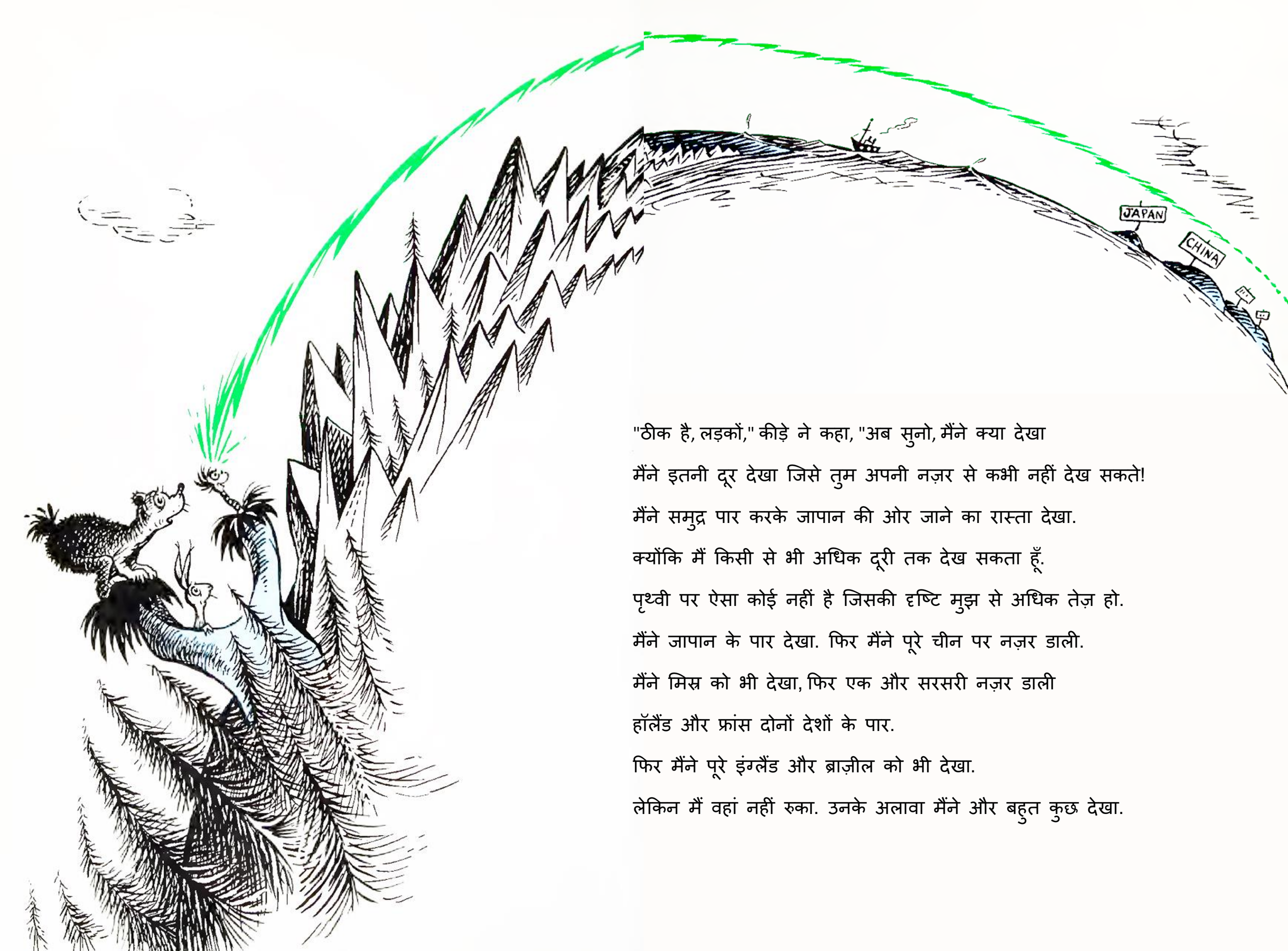

"ठीक है, लड़कों," कीड़े ने कहा, "अब सुनो, मैंने क्या देखा

मैंने इतनी दूर देखा जिसे तुम अपनी नज़र से कभी नहीं देख सकते!

मैंने समुद्र पार करके जापान की ओर जाने का रास्ता देखा.

क्योंकि मैं किसी से भी अधिक दूरी तक देख सकता हूँ.

पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं है जिसकी दृष्टि मुझ से अधिक तेज़ हो.

मैंने जापान के पार देखा. फिर मैंने पूरे चीन पर नज़र डाली.

मैंने मिस्र को भी देखा, फिर एक और सरसरी नज़र डाली

हॉलैंड और फ्रांस दोनों देशों के पार.

फिर मैंने पूरे इंग्लैंड और ब्राज़ील को भी देखा.

लेकिन मैं वहां नहीं रुका. उनके अलावा मैंने और बहुत कुछ देखा.

"और फिर मैं देखता रहा और देखता रहा

मैंने पूरी दुनिया का चक्कर लगाया और फिर वापस इस पहाड़ी पर आया!

फिर मैंने इस पहाड़ी पर देखा, चूँकि मेरी दृष्टि बहुत तेज़ है,

मैंने वहां पर अब तक के दो सबसे महान बेवकूफ देखे!

जो मूर्ख मैंने देखे वे और कोई और नहीं बल्कि तुम दोनों थे,

तुम दोनों में से कौन बेहतर है? तुम यह बहस कर रहे थे

तुम कुछ भी अच्छा नहीं, सिर्फ बकवास कर रहे थे!"

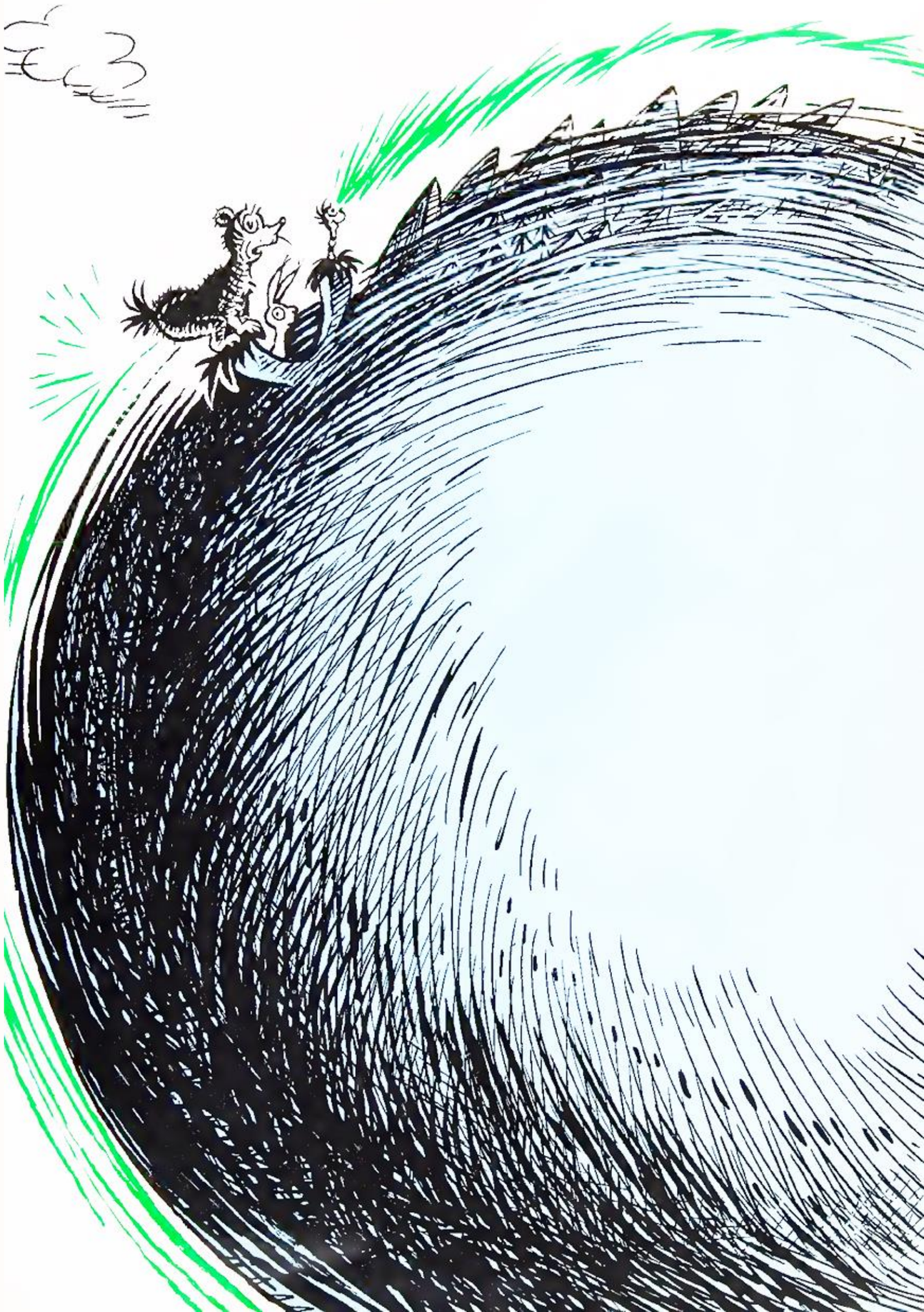

फिर छोटे बूढ़े कीड़े ने अपने सिर को हल्का सा झटका दिया
अपने बिल में गोता लगाया और अपने काम पर वापस गया.